दिव्य जीवन

स्वामी शिवानंद सरस्वती

स्वामी चिदानंद सरस्वती

(दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा)
(ज्ञानयज्ञ म्हणून वितरित)
वर्ष १० । अंक ११
नोव्हेंबर-डिसेंबर २०१५

दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा

दिव्य जीवन परिवारातील साधकांना
दिपोत्सवानिमित्त मनःपूर्वक शुभेच्छा !
आपल्या साधनेच्या मार्गावरील प्रवासात
सद्गुरुंच्या कृपेची सावली सदैव असो !

महिन्याचा विचार

दिव्य जीवन कैसे जिये !

गुरुदेव के 'दिव्य जीवन' के सिद्धान्त का सार मुख्य रूप से यह है कि व्यक्ति को दिव्य जीवन यापन के लिए अपने घर, परिवार, कार्य-व्यापार इत्यादि को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। वस्तुतः जिसे छोड़ने की आवश्यकता है, वह है अहंकार कि 'मैं यह देह हूँ, मेरा अमुक नाम है, मैं यह हूँ' इत्यादि; इस प्रकार शरीर के प्रति मोह, स्वार्थ, रुचियों और अरुचियों इत्यादि के प्रति मोह।

आपके जीवन को जो दिव्य बनाता है, वह है ब्रह्म द्वारा रचे हुए मानव-स्वभाव में जो दिव्यता से हीन पहलू है, उसको मिटा कर अपने वास्तविक दिव्य स्वरूप में स्थित रह कर उद्‌भासित होना। दिव्य जीवन की साधना का यही मुख्य कार्य है।

जीवन को दिव्य बनाने के लिए आन्तरिक परिवर्तन की आवश्यकता है, बाह्य की नहीं। आपका ध्यान जो देह पर केन्द्रित है, मन पर केन्द्रित है, मन के विचारों, भावनाओं, उद्वेगों, इच्छाओं, कल्पनाओं और स्मृतियों पर केन्द्रित है, उसका वहाँ से स्थानान्तरण करके उच्चतर आयाम पर, एक भिन्न स्तर पर स्थित कर देना, जहाँ आपकी चेतना सदैव जागरूक रह कर इस भाव को दृढ़ करती रहे - ''अहं आत्मा निराकारः सर्वव्यापी स्वभावतः'' (मै स्वभाव से निराकार सर्वव्यापक आत्मा हूँ)।

यह दिव्य जीवन है। यह दिव्य जीवन का मुख्य सिद्धान्त - वेद - वाक्य है। जिनका आपने त्याग करा है, वह है 'अहं' और 'मम' का भाव। देहाध्यास, देह से सम्बन्धित इच्छाओं की दास्यत्व, मन में उठने वाली वासनाओं की अनिच्छाओं और क्रोध आदि की भावनाएँ। मुक्ति तो इन्द्रियों की दासता से पानी है। इन्द्रियजन्य सुखों, मन के संकल्प - विकल्पों और अगणित इच्छाओं के दास्यत्व की अवस्था को समाप्त करना पड़ेगा। आप इस देह से कुछ अन्य हैं - आप दिव्य हैं - यह जान लेना ही दिव्य जीवन है।

और प्रतिदिन प्रातः से रात्रि तक निरन्तर इस स्वरूप - अवस्था को अभिव्यक्त करते रहना दिव्य जीवन जीना है। इसमें आपकी चेतना का आन्तरिक

परिवर्तन ही अब बाह्य जीवन में अभिव्यक्त होने लगता है। अब आप निजी रुचियों - अरुचियों, पूर्व-धारणाओं, मान्यताओं और विचारों वाले सामान्य, तुच्छ व्यक्ति मात्र नहीं रह जाते, परंतु आपका व्यक्तित्व अब स्वयं को उदात्त और उत्कृष्ट ढंग से अभिव्यक्त करने लगता है, जो अपने में दिव्यता के गुण लिये हुए होता है - दिव्य विचार, दिव्य अनुभूति, दिव्यतापूर्ण कार्य और वचन । तब आपका प्रत्येक व्यवहार दिव्यता के लिये होता है।

इस प्रकार यह आन्तरिक परिवर्तन ही बाह्य रूपान्तरण ले आता है; क्योंकि अब यह वही व्यक्ति कार्य नहीं कर रहा होता, प्रत्युत् अब एक भिन्न ही व्यक्ति, जागरूकता लिये हुए एक जागृत व्यक्ति हो जाता है। अब देह-बोध लिये हुए पहले वाला व्यक्ति न हो कर, स्वयं का ईश्वर से तादात्म्य स्थापित किये हुए अन्य ही व्यक्ति हो जाता है।

''मैं ईश्वर का ही एक अंश हूँ। दिव्यता मेरा वास्तविक गुण है। दिव्य होना मेरा स्वभाव है। अतः इस दिव्यता को अभिव्यक्त करना मेरा सहज कर्तव्य है।'' इस प्रकार सोच कर वह अपने आपमें और अपने प्रत्येक कार्य में नूतन दृष्टिकोण, नव-जीवन और नवीन भावना ले आता है। यह वह कार्य है जिसे आप सबको अनिवार्य रूप से स्वयं करना चाहिए। यह रूपान्तरण निजी और आन्तरिक भी है और आपके व्यक्तित्व का भी है।

आपकी यह रूपान्तरित चेतना आपके चतुर्दिक् जगत् को किस प्रकार लाभान्वित कर सकती है, यह सब आपने खोजना है। किन्तु सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कार्य आपकी दिव्यता की ही अभिव्यक्ति हो जाता है। प्रत्येक पल और प्रत्येक कर्म नयी विशेषताओं से ओत-प्रोत हो जाता है। सावधान रहें ! जागरूक रहें ! यह देखने का प्रयास करें कि जो कुछ भी आप करते हैं, वह आपकी दिव्यता की, आपके दैवी स्वभाव (जो कि अपने आपमें परिपूर्ण होता है।) की अभिव्यक्ति है क्या ? आप वास्तव में जो कुछ हैं, यह वही होने का प्रयास ही है। यह एक भिन्न प्रकार की जागरूकता और चेतनता में जीने का प्रयास है, एक उच्चतर और महान् स्तर पर रहते हुए कार्य करने का प्रयत्न है।

- स्वामी चिदानंद सरस्वती

चिदानंद - चालिसा

श्री गुरु ब्रह्मदेव है, गुरु है विष्णु स्वरूप।
गुरुही है शिव महादेव गुरु परब्रह्मस्वरूप॥
चिदानंदजी की जय जय हो ।
जय गुरुदेव, चिदानंद स्वामी।
जय करुणामय, अंतर्ज्ञानी॥१॥
शिवानंद के प्राण बहिश्चर।
हे भक्ती औं ज्ञान के सागर॥२॥
श्री निवास औं देवि सरोजिनी।
धन्य तुम्हारे जनक औं जननी॥३॥
घर लक्ष्मी का निवास निर्मल।
संस्कारोंसे मन थे उज्ज्वल ॥४॥
उसी वंश के दिव्य धरोहर।
बन के आये बालक श्रीधर॥५॥
विद्यावान, विनम्र, सद्गुणी।
समदर्शी, श्रद्धालु दानी॥६॥
जीवनरेखा राजपुत्रसी
छोड बने त्यागी संन्यासी॥७॥
शिवानंद सद्गुरु थे ज्ञानी।
शिवस्वरूप साकार, विरागी॥८॥
देख शिष्य की अद्भुत प्रगती।
नाम दिया 'श्री चिदानंदजी' ॥९॥
दिव्य जीवन संघ के सारे।
तत्त्व चिदानंद रुप है धरे॥१०॥
अतिलीन रहते सेवामें।
मातृहृदय सा प्रेमभी मनमें॥११॥

देह कर्म में जुटा हुआ था।
ध्यान न अंतर में छूटा था॥१२॥
आँख खोल देखी जब दुनिया।
आत्मतत्त्व कणकण में पाया॥१३॥
काम, क्रोध और विषय भी सारे।
दूर रहे डरके बेचारे॥१४॥
धर्माचार जो कठिन, गहन था।
शिवानंद ने सुलभ किया था॥१५॥
इसी सीख का फिर संस्थापन।
करते बीता सारा जीवन ॥१६॥
देश-विदेश के सारे ज्ञानी।
हाथ जोडते सुनकर बानी॥१७॥
दीन दुखी जो जग से हारे।
तुम्ही तो उनके एक सहारे॥॥१८॥
अनाथ हो या कुष्ठरोगी हो।
तुम उनके भगवान बने हो॥१९॥
परपीडा ना तुम सह सकते।
अपनी तकलीफें ना गिनते॥२०॥
भेदभाव छूता ना मन को।
सिर्फ मानते मानवता को॥२१॥
काल औं अंतर से भी परे हो।
परब्रह्म तुम देहधारि हो॥२२॥
तुममें पाये भक्त तुम्हारे।
इष्ट देवता अपनी प्यारे ॥२३॥
तुम करुणा की मंगलमूर्ती।
तुम आशाओंकी हो पूर्ती॥२४॥

हम तो तुम्हारे बालक ही है।
तुम बिन हमरा कोई नहीं है॥२५॥
अहंकारने हम को घेरा।
काम-क्रोध का मन में डेरा॥२६॥
मन-शरीर संसार का बंदी।
आशा-तृष्णा भरी भवनदी॥२७॥
कर्म भंवर में डूबी नैय्या।
तुम्ही बचाओ बनके खिवैय्या॥२८॥
अब भी लगती माया प्यारी।
अभी न मेरी ममता हारी॥२९॥
उस पार मुक्ती का डेरा।
त्रस्त हृदय को लगता प्यारा॥३०॥
इस उलझनमें फँसा है जीवन।
रेत सा फिसले हाथ से क्षण क्षण॥३१॥
तुम्ही लाज रखना अब मेरी।
देकर मन का शांती सारी ॥३२॥
अभ्युदय दो, दो निःश्रेयस।
प्रेयस भी दो, दे दो श्रेयस॥३३॥
तुमबिन कहाँ और मैं जाऊँ।
किसको मन की बात बताऊँ॥३४॥
अब आओ बनकर तुम माता।
गोद में लेलो बालक रोता॥३५॥
हृदयकमल में उठी प्रार्थना।
हर अक्षर की तुम ही प्रेरणा॥३६॥
देना आशिष इस रचना को।
जो भी पढ़े यह स्मरकर तुमको॥३७॥

सफल मनोरथ उसके होवे।
चारों पुरुषार्थोंको पावे ॥३८॥
हर संकट क्षण में कट जायें।
असीम वो मन की शांती पाये ॥३९॥
बार बार लो प्रणाम मेरा।
शीशपर रहे हाथ तुम्हारा ॥४०॥
महाराजाधिराज सद्गुरु परब्रह्म योगिराज
श्री स्वामी चिदानंदजी की जय ॥
श्री स्वामी चिदानंदार्पणमस्तु ॥

❑

निवेदन : परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के 'पावन जन्म शताब्दी महोत्सव' के शुभ अवसर के उपलक्ष्य में, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए, एक 'प्रचार-यात्रा' २२ अक्तूबर २०१५ को विजयादशमी के दिन परम पावन सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के समाधि मन्दिर से प्रारम्भ होगी तथा भारतवर्ष में दक्षिणावर्ती दिशा में घूमेगी । 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' के श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज सद्गुरुदेव की परम पुनीत पादुकाओं को साथ ले कर, यात्रा का नेतृत्व करेंगे। 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' की शाखाओं एवं भक्तों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी शाखाओं/स्थानों पर यात्रा-दल का स्वागत करें तथा सत्संगों का आयोजन करके सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आशीर्वाद प्राप्त करें।

महाराष्ट्रातील दौरा

पुणे : १४ जानेवारी २०१६ नाशिक : १५ जानेवारी २०१६
ठाणे : १६ जानेवारी २०१६ मुंबई : १७ जानेवारी २०१६

सूचना : हा दीपावली विशेष अंक, जोड अंक असल्याने आपल्या मासिक पत्रिकेचा पुढील अंक जानेवारी २०१६ मध्ये प्रकाशित होईल.

आवाहन

दि. १४ जानेवारी २०१६ रोजी सद्गुरु स्वामी चिदानंद सरस्वती जन्मशताब्दी निमित्त सुरु झालेली आध्यात्मिक प्रचार यात्रा पुण्यात येत आहे. त्याची पूर्वतयारी सुरु झाली आहे. सदर कार्यक्रमानिमित्त परिवारातील सदस्यांना आर्थिक मदतीचे आवाहन करण्यात येत आहे. इच्छुकांनी दि. ३१ डिसेंबर २०१५ पर्यंत आपले धनादेश 'Divine Life Society, Pune Branch' या नावाने काढून पुणे शाखेच्या पत्त्यावर पाठवावेत.

दिव्य जीवन संघ पुणे शाखा वृत्तांत

- ऑक्टोबर महिन्याचा सत्संग डॉ. राव यांच्या घरी ऑक्टोबर २५, २०१५ रोजी संपन्न झाला. त्याचवेळी जानेवारी २०१६ मध्ये पुणे येथे येणाऱ्या स्वामी चिदानंद आध्यात्मिक यात्रेची तयारी करण्यासंदर्भात सविस्तर चर्चा करण्यात आली. नोव्हेंबर महिन्याच्या सत्संगात याविषयी पूर्ण नियोजन करण्याचे ठरले.
- 'दिव्य जीवन' या मासिक पत्रिकेचा अंक (हार्ड आणि सॉफ्ट कॉपी) परिवारातील सदस्यांना वितरीत करण्यात आला.

❀ पुणे शाखेचा पत्ता ❀

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद' एस्. २०
सहजीवन सोसायटी
पर्वती, पुणे ४११००९
☎ ९३७०५७०२०६

श्री. नितीन देशपांडे
'ईशावास्य', प्लॉट नं. ४९ /सायंतारा,
डी. एस. के. विश्व
धायरी, पुणे ४११०४१
☎ ९८५०९३१४१७ , ९८५०८२६९९०

पुस्त डाक

प्रति